पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2025
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी–054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–033 : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम	30.09.2025	31.03.2026

***नोट : कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से

संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.–054
प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–054
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–054/टीएमए/2025
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता एवं स्थिति' पर निबंध लिखिए। 10

2. 'संसद में अनुवाद' विषय पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 10

3. बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5x2=10
   क) पर्यटन साहित्य–अनुवादक में अपेक्षित गुण
   ख) विधि के क्षेत्र में हिंदी

5. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

   (1) quasi-permanent, (2) relief and rehabilitation, (3) security deposit, (4) standing order, (5) travelling allowance bill, (6) utilization certificate, (7) verbal agreement, (8) underground rail, (9) inspection certificate (10) rural works programme (11) advance copy, (12) budget grant, (13) drawing and disbursing, (14) dispatch register, (15) introductory lecture, (16) informal education, (17) joint resolution, (18) polling station, (19) notification (20) fiscal policy.

6. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के हिंदी पर्याय लिखिए : 10
   1. according to convenience
   2. ban on future promotion
   3. checked and found correct
   4. day to day administrative work
   5. explanation may be called for
   6. governed by rules
   7. his request is in order
   8. in the prescribed manner
   9. matter is under consideration
   10. please comply before due date

7. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए: 10X3=30

(A) The Constitution is not merely a lifeless book. It is a dynamic process. It deals with functioning institutions and it comes to have meaning only from how it is operated and by whom it is operated. The citizens are concerned with the Constitution as it affects their lives as it governs them. While a document is an inert lifeless thing the Constitution is a living dynamic reality. It is always developing. The Constitution of India was developing and taking shape even before independence and it continued to be made even after independence in 1947 or even after 26 January 1950. In the

Constitution of India there are eleven duties mentioned as Fundamental Duties of every citizen. The very first duty of every citizen is to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions. But, how many citizens of India**,** even among the educated, know, firstly that there is a separate part devoted to fundamental duties? We all know about fundamental rights and seek them all the time. But majority of us do not know that there are fundamental duties of citizens also. Secondly how many of us know the Constitution.

(B) Retail sector in India is the one of the more prominent sectors contributing to over 10% of GDP besides being the second largest contributing to over 8% of employment generated in the country. Although the retail sector in India is highly fragmented into large, organized retailers and small medium retailers, it employs a vast workforce of more than 40 million people. According to a report by Confederation of Indian Industry (CII), a cohesive National Retail Policy can help in generating more than 3 million jobs by the year 2024. Retail is a people-intensive industry that is greatly driven by the attitudes of customers; thus, most companies seek to develop skilled human resource as other resources can be replicated or standardized in today's competitive market, ensuring that the demand for skilled manpower remains strong in the industry. Over the past decade, a steady growth in retail which is set to cross the $1.75 trillion mark by 2026 from $795 billion in 2017 and E-commerce which is set to be worth $200 billion by 2026 from $30 billion in 2019 at 30% other sectors has opened a huge gateway for employment opportunities for youth as consumption of retail goods and services is projected to increase in the years to come.

(C) The government has given itself a 90-day breather to implement transparency provisions under the Lokpal law and has set September 15 as the deadline for government servants to file their assets and liabilities declaration. Under the Lokpal law, all government servants irrespective of their rank will have to declare their assets and liabilities every year. The assets declarations for central government employees will be put in public domain.

Government sources said orders were issued for giving officials some more time since conduct rules for different services and ranks were yet to be finalized in the light of the suggestions received from various cadre controlling authorities. On its part, the Department of Personnel and Training (DoPT) has laid down the process and finalized the ground rules to be followed by public servants in this regard. The Lokpal and Lokayukta Act 2013 had made it mandatory for every public servant to make the annual declaration and not just senior officials, as required under existing provisions.

Under rules notified by DoPT last week, the competent authority would have discretion to exempt public servants from declaring assets valued at less than four months' basic salary or Rs. 2 lakhs. Government officials said the exemption clause had been incorporated so that the exercise to improve transparency did not end up harassing public servants. The DoPT also has adapted declaration forms for assets and liabilities filed by candidates in Lok Sabha and assembly elections to enlarge the scope of the forms.

'The original version of the forms left room for officials to provide vague information or skip certain information. This would not be possible in the new formats,' a government official said, pointing to provisions that require officials to declare the weight and value of jewellery owned by them, spouse and dependents. The practice of government officials declaring their assets – and information about their immovable assets being made public – is only a couple of years old.

8. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10

आज का युवा शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ एक मानसिकता तैयार कर लेता है कि उसे नौकरी करनी है और उसे मालिक नहीं नौकर बनना है। इस मानसिकता के कारण उसे सदैव परेशानियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि आज के दौर में बढ़ती हुई आबादी के अनुसार नौकरियाँ सीमित हैं। इसलिए जरूरी है कि युवाओं में शिक्षा के साथ–साथ कौशल का विकास भी किया जाए जिससे आज का युवा–वर्ग स्व–रोजगार को अपनाकर न केवल स्वयं स्वावलंबी बनें बल्कि और चार साथियों को भी रोजगार देने में सक्षम हों।

आज के दौर में युवाओं को यह सोच अवश्य विकसित करनी चाहिए कि जब वे स्वयं मालिक बनेंगे तो दस और लोगों को रोजगार देने में सक्षम हो सकेंगे। इस सोच के साथ शिक्षा सहित स्व–रोजगार की ओर ध्यान देना, आज के समय की मांग है। इसलिए युवाओं को स्व–रोजगार अपनाने के लिए कौशल विकास केंद्र तथा अन्य ऐसे केंद्र, जो तकनीकी तौर पर उन्हें स्वावलंबी तथा हाथ के हुनर में सक्षम करें, की सहायता लें और स्व–रोजगार को अपनाकर खुद के साथ–साथ अपने आसपास रह रहे युवाओं को भी स्वावलंबी बनाने का कार्य करें।

स्वावलंबन के लिए अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें रुचि के अनुसार कौशल प्राप्त कर अपने जीवन को सरल एवं सुखद बनाया जा सकता है। स्व–रोजगार के लिए जब शुरू की है तो ध्यान कौशल विकास केंद्रों में दी जाने वाली शिक्षा पर भी अवश्य जाना चाहिए।

*****